



P2 | Stage 3

Story book on hearing impaired

Nilmani Kumar | Visual Communication | 146250012

Guide:- Prof. G.V. Sree Kumar

Co Guide:- Girish Dalvi

Aim

- To compile the experience of Hearing Impaired people.
- Role of parents and teachers during primary education.
- To inspire readers through their stories.
- Illustrations to make stories more interesting.

Illustration and Story for Taranath Shenoy(Swimmer)



तारानाथ शेनॉय

इस कहानी के मुख्य पात्र तारानाथ शेनॉय है।
ताई ने कहानी को आगे बढ़ाने से पहले एक
पुराने अखबार से आर्टिकल का टुकड़ा हमें
दिखाया जिसमें लिखा था।



पद्मश्री, अंतरराष्ट्रीय तैराक विजेता तारानाथ
शेनाँय आर्टिकल में आगे पढ़ते हमने पाया कि
तारानाथ जी बोल सुन नहीं सकते थे | और
आँखों की रौशनी का भी अधूरा सहारा था |



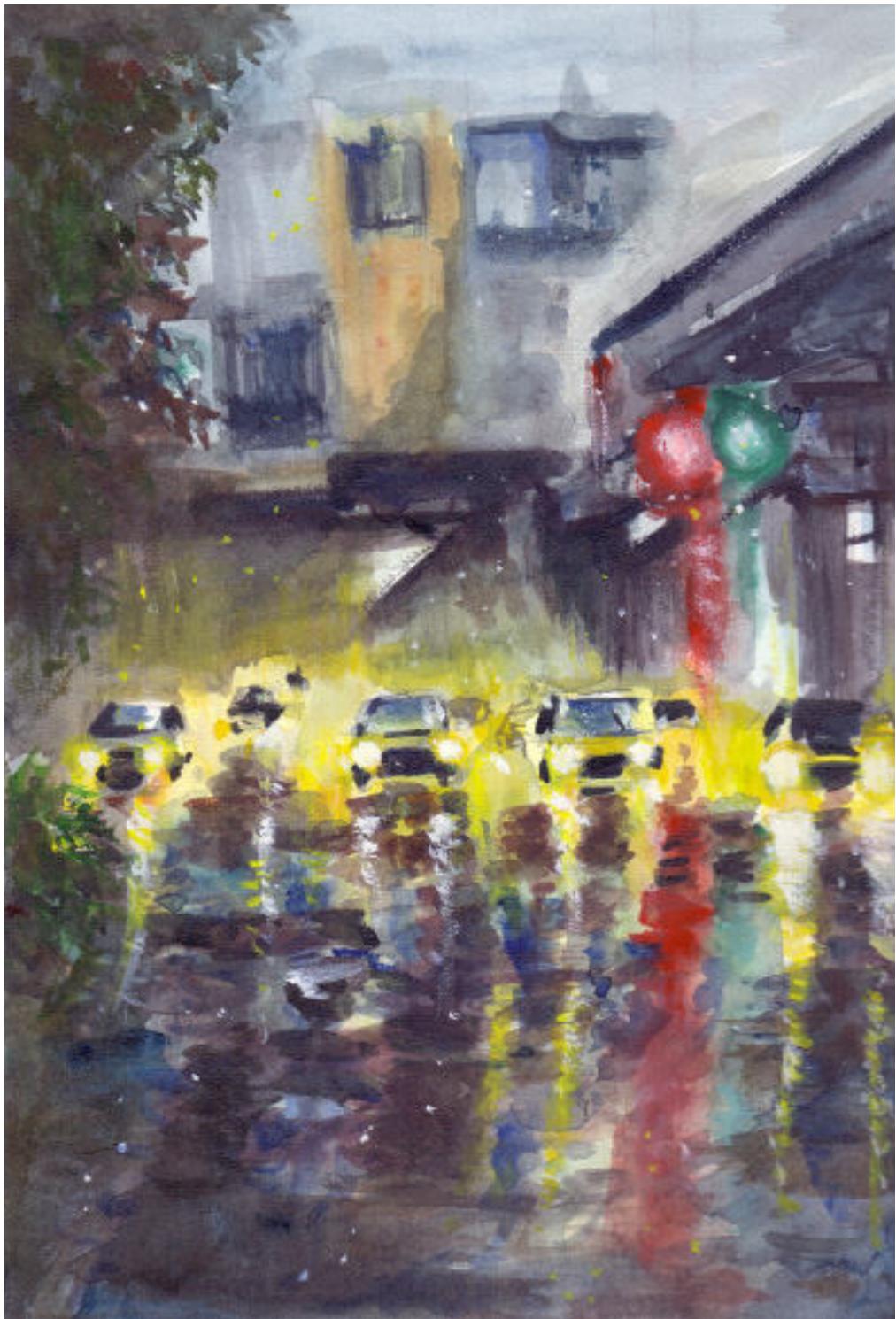
मैं २३ वर्ष का था मुझे पहली दफा चयनित
नहीं किया गया था | क्यों की मेरी वजन उनके
मापदंड के अनुसार नहीं था और मेरा बी.पी. भी
ज्यादा था | लेकिन अगले वर्ष अच्छी तैयारी के
साथ गया सारे प्रतिभागी मछली जैसे प्रतीत हो
रहे थे | ऐसा लग रहा था, यही मेरा घर है और
यहीं दुनिया |



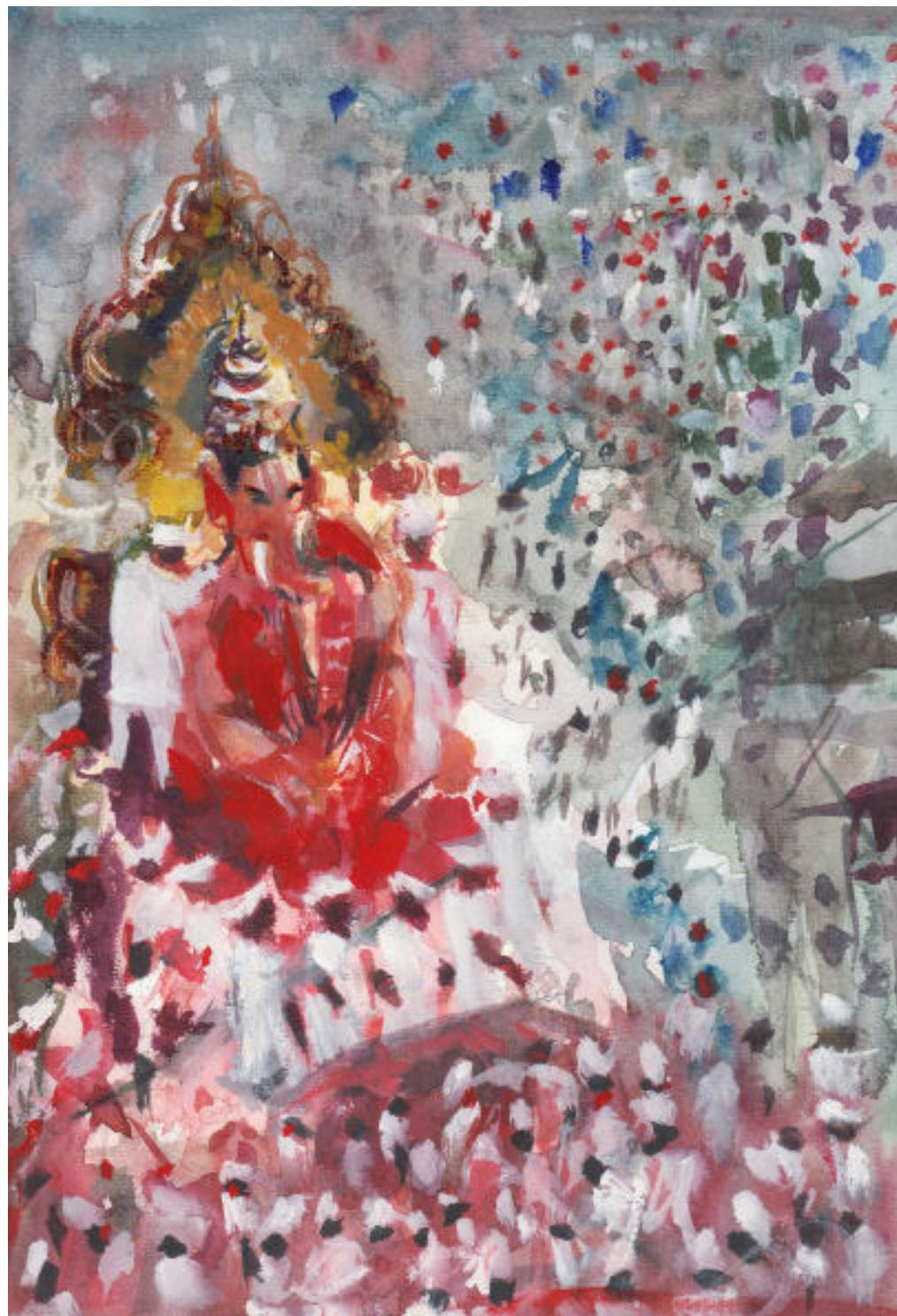
उनकी माँ ने अपना धैर्य बाँधा और वो दूसरे
स्कूल की तालाश में निकल पड़े | तारानाथ का
आत्म बल ही था जिसने उन्हें अगली स्कूल में
दाखिला दिलाया | उन्हें जैसे ही दाखिल मिला
उन्होंने ने ऐसा महसूस किया के वे बीच समुद्र
में गोते लगाकर गहरी सांस ले रहे हैं | उनकी
पानी के साथ ऐसा रिश्ता है जैसे आत्मा और
शरीर का होता है |



वजह है कि बॉम्बे के बारिश से भी मेरा अलग ही
नाता है | हमने खिड़की के बाहर देखा बारिश हो
रही थी | और बत्ती भी गुल हो गयी थी |



बाहर के गाड़ियों की रौशनी घर के अंदर आ
रही थी | ट्रैफिक के शोर ने सभी की चुप्पी तोड़
रखी थी | तभी ताई ने मोमबत्ती जलाया और
कहानी को आगे बढ़ाया |







२३ सितम्बर २०००

प्रीती अपने कलाकृति को दीवार पर लगा रही है। चिक्के तिक्के से बानी आकृतियाँ कुछ व्याख्यान करने का प्रतीत कर रही है। आखरी तस्वीर को दीवार पर लगाने के पश्चात अपने कदम पीछे करते हुए एक टक तस्वीर को देखती है और अंतर्मन की असमंजस में खो सी गयी। वह आखरी तस्वीर अपने जीवन गाथा सुनाने को व्याकुल हो रही थी। चित्र में एक कॉन्स्टर्ट का टिकट, घोड़े के काले रंग का नाल, एक छोटा सा कमरा, कुर्सी और उसके ऊपर कुछ पुस्तकें रखी हुई। चित्र में सूरज की रौशनी का रंग बिखरा हुआ था। कुर्सी में रखी हुई पुस्तक को एक टक देखते हुए प्रीती अपने आप को बस के अंदर पाती है।

१० अक्टूबर १९९०

हर शाम की तरह इस शाम भी प्रीती अपने दूकान को बंद करके जा रही होती है। प्रीती डोम्बिवली के एक छोटे से अपार्टमेंट में अपने बूढ़ी माँ के साथ रहती है। और कुछ ही दुरी पर उसने शरबत की दूकान लगायी हुई है। हर शाम वो कुछ समय के लिए मानसी ताई से मिलने जाती है। दोस्तों इससे पहले की मैं आपके सामने कहानी का अगला धागा पीरों दूँ यह अच्छा होगा की आप जान ले मानसी ताई कौन थी। मानसी ताई एक शिक्षिका थी उन्हें कहानियों में काफी दिलचर्षी थी। उनका बस चले तो किसी भी विसय वस्तु को कंद्र बिंदु बनाकर कहानी में तब्दील कर दे दोस्तों मैं मानसी ताई के लिए थी का प्रयोग इस लिए कर रहा हूँ क्यों की मुझे यह पता नहीं है वो आज कल कहाँ है अगर वह सचमुच लापता हो गए है तो कहीं उनकी अद्भुत कहानियाँ लापता न हो जाए इस लिए पेश करता हूँ।

उनके कहानियों की अच्छी बता यह है कि वो अपने कहानियों में सच्चे पात्र और घटनाओं का जिक्र करती थी। शिक्षिका होने के नाते अपना कर्तव्य पूरा करके हर शाम हमारा इंतज़ार किया करती थी। उनका छोटा सा कमरा नीले रंग सी पुती दीवारें और आस्थ्य की बात यह है ताई जो खुद कहानियों की शौकीन थी उनके कमरे में किताबों के अलावा कई अजीब चीज़े थी। जैसे काले रंग के घोड़े का नाल और बरसों पुराण रखा कॉन्स्टर्ट का टिकट न जाने कई ऐसी अजीब चीज़े इस कहानी का शीर्षक “सुबह” है दोस्तों अगर शीर्षक न पसंद आये तो इसका जिम्मेवार मैं नहीं हूँ।

पहली शाम

“सुबह”

इस कहानी के मुख्य पात्र तारानाथ शेनॉय है। ताई ने कहानी को आगे बढ़ाने से पहले एक पुराने अखबार से आर्टिकल का टुकड़ा हमें दिखाया जिसमें लिखा था। पद्मश्री अंतरराष्ट्रीय तैराक विजेता तारानाथ शेनॉय आर्टिकल में आगे पढ़ते हमने पाया कि तारानाथ जी बोल सुन नहीं सकते थे। और आँखों की रौशनी का भी अधूरा सहारा था। हाँ लेकिन उनकी जीवन गाथा थी बड़ी रोमांचक, जब वह १ साल के थे तब उनके माँ को एहसास हो गया था कि यह बोल सुन नहीं सकते। यह पता होने पर उनकी माँ को काफी चिंता हुई।

की तारानाथ के भविष्य का क्या होगा यह जिंदगी के पहिये को कैसे रफ्तार दे सकेगा। यह सोचने का वक्त गया ही नहीं था कि उन्हें पता चला कि उनकी आँखों की रौशनी भी अधूरी है। उन्होंने ने मुलुंड अस्पताल के चक्कर काटे डॉक्टरों ने सलाह दिया कि जल्द से जल्द तारानाथ को किसी विशेष स्कूल में दाखिया दिला दे ताकि इनकी स्पीच में वृद्धि हो सके। तारानाथ ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा के लिए सी.एस.इ.डी. का दरवाजा खोला। स्कूल के सामने एक स्विमिंग पूल था जब भी स्कूल की घंटियाँ समाप्त होती थीं। तारानाथ लोगों को घंटों तैरते देखते थे। उनके माँ ने उन्हें स्कूल में भर्ती करते वक्त सोचा था, कि जैसे तैसे बस इसका पढाई पूरा हो जाय। उन्हें क्या पता था कि यह स्कूल की चार दीवारी इनके लिए खुला आसमां बन जाएगा। एक दिन तारानाथ स्कूल जाने के बजाये स्विमिंग पूल जाना ही उचित समझा उनकी उम्र महज ८ साल थी।

जब शिक्षिका को पता चला की तारानाथ अपनी अलग ही दुनिया बना कर पानी में गोते लगा रहे |
तो उन्होंने उनकी माँ को बताया और उन्होंने सलाह दी की चौथी कक्षा के बाद इन्हे नार्मल स्कूल में
दाखिला दिला दे | तारानाथ दस साल के थे और अपनी माँ के साथ दादर के एक स्कूल में दाखिले
के लिए गए | वहां के प्रिंसिपल ने उन्हें साफ़ मना कर दिया | उन्हें ने कहा यह कोई गूँगे बेहरे का
स्कूल नहीं है आप अपने बच्चे को किसी विकलांग स्कूल में डाल दे | तारानाथ बोल सुन् नहीं
सकते थे लेकिन उन्हें पुराने स्कूल ने लिप रीडिंग का ज्ञान दे दिया था | प्रिंसिपल के इस व्यवहार से
उन्हें यह लग रहा था की उन्होंने क्या ऐसे गलती की है जिसकी सजा उन्हें मिल रही है | उनकी माँ
ने अपना धैर्य बाँधा और वो दूसरे स्कूल की तालाश में निकल पड़े | तारानाथ का आत्म बल ही था
जिसने उन्हें अगली स्कूल में दाखिला दिलाया | उन्हें जैसे ही दाखिल मिला उन्होंने ने ऐसा महसूस
किया के वे बीच समुद्र में गोते लगाकर गहरी सांस ले रहे हैं | उनकी पानी के साथ ऐसा रिश्ता है
जैसे आत्मा और शरीर का होता है | तारानाथ जी के कथनानुसार- मुझे इंग्लिश चैनल का स्विमिंग
कम्पटीशन आज भी याद है | मैं २३ वर्ष का था मुझे पहली दफा चयनित नहीं किया गया था | क्यों
कि मेरी वजन उनके मापदंड के अनुसार नहीं था और मेरा बी.पी. भी ज्यादा था | लेकिन अगले वर्ष
अच्छी तैयारी के साथ गया सारे प्रतिभागी मछली जैसे प्रतीत हो रहे थे ऐसा लग रहा था यही मेरा
घर है और यहीं दुनिया | वजह है की बॉम्बे के बारिश से भी मेरा अलग ही नाता है |

हमने खिड़की के बाहर देखा बारिश हो रही थी | और बत्ती भी गुल हो गयी थी | बाहर के गाड़ियों की रौशनी घर के अंदर आ रही थी | ट्रैफिक के शोर ने सभी की चुप्पी तोड़ रखी थी | तभी ताई ने मोमबत्ती जलाया और कहानी को आगे बढ़ाया | तारानाथ के सफलताओं के पीछे उनकी मेहनत छुपी हुई है | स्कूल के क्लास के बाद उनकी माँ और वह मिलकर क्लास की विषय पर चर्चा करते थे | और उनकी माँ उन्हें मार्किट भेजकर चीज़े लाने के लिए बोलती थी |

Illustration for Sharanya Manoharan(Bharatnatyam Dancer)

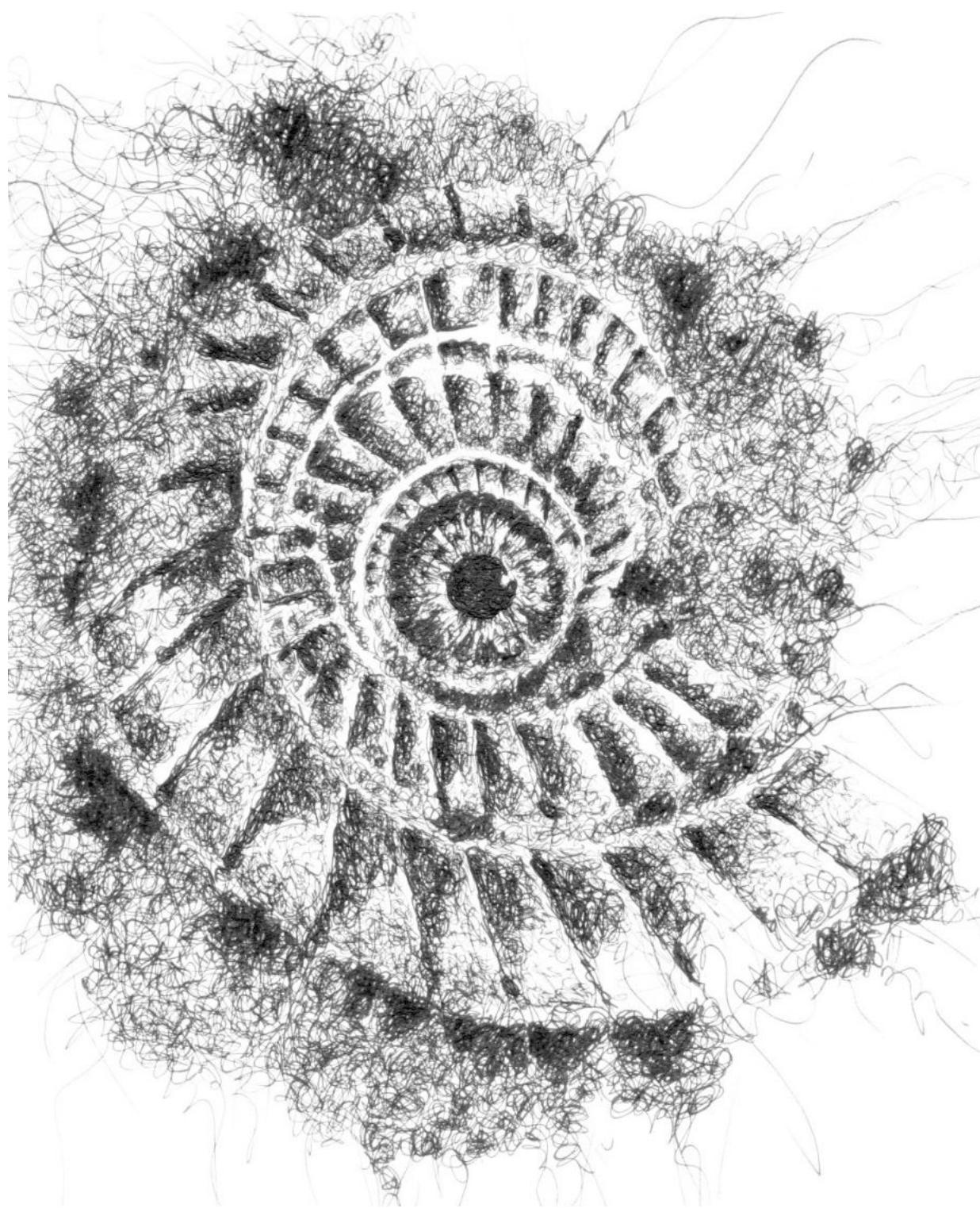


शरण्या मनोहरन

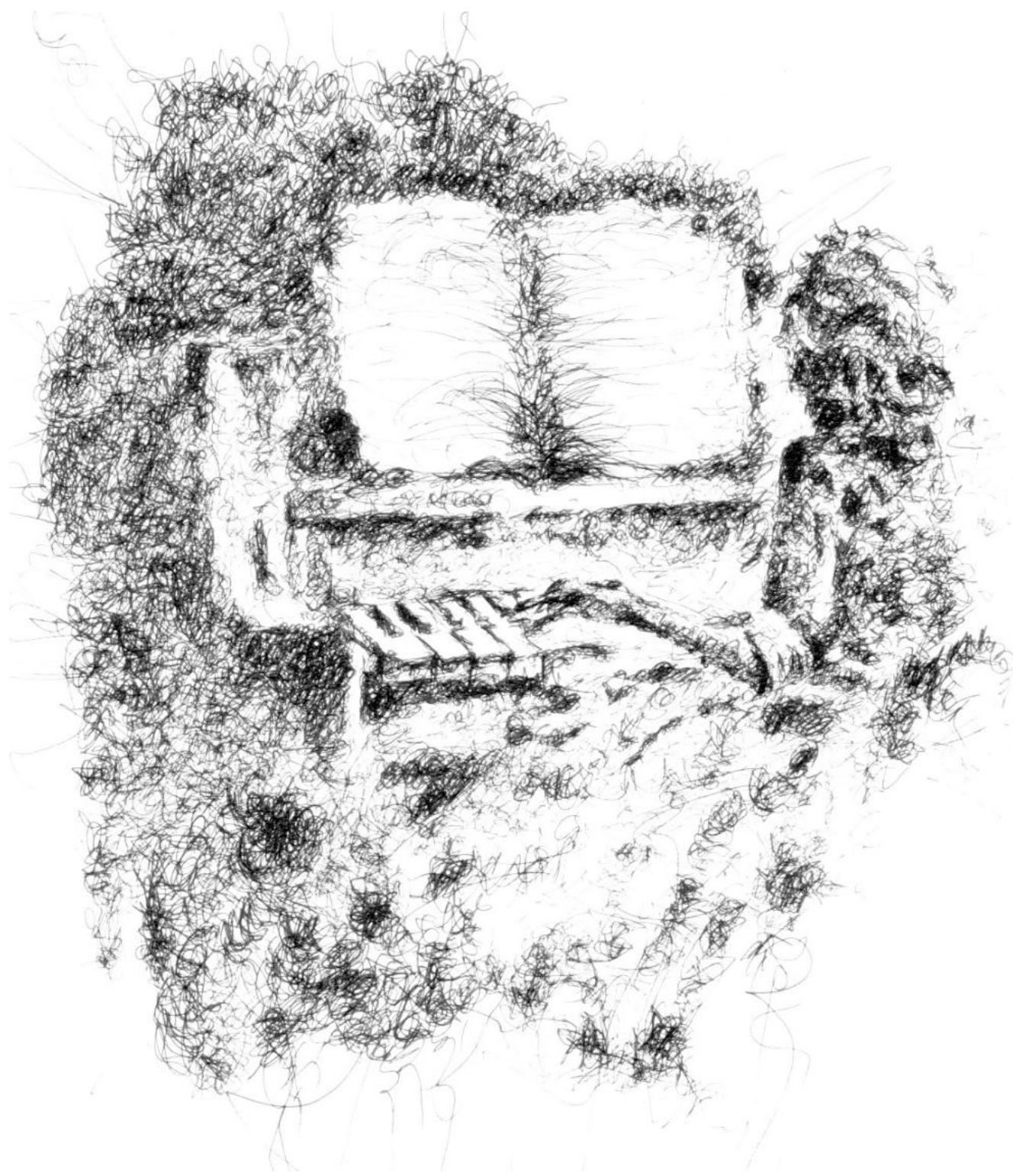












Thank you